श्री णमोकार मंत्र पूजा

स्थापना (गीता छन्द)

अनुपम अनादि अनंत है, यह मंत्रराज महान है।
सब मंगलों में प्रथम मंगल करत अघ की हान है।।
अर्हन्त सिद्धाचार्य पाठक साधुओं की वन्दना।
इस शब्दमय परब्रह्म को थापूं करूं नित अर्चना।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार मंत्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक (भुजंगप्रयात छन्द)

महातीर्थ गंगानदी नीर लाऊं,
महामंत्र की नित्य पूजा रचाऊं।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूं मैं,
महाघोर संसार दुःख से बचूं मैं।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।।१।।

कपूरादिचंदनं महागंध लाके।
परं शब्द ब्रह्मा की पूजा रचाके।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

पयः सिंधु के फेन सम अक्षतों को।
लिया थाल में पुंज से पूजने को।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

जुही कुंद अरविंद मंदार माला।
चढ़ाऊं तुम्हें काम को मार डाला।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

कलाकंद लड्डू इमर्ति बनाऊं।
तुम्हें पूजते भूख व्याधि नशाऊँ।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

पीली चिटकी

शिखा दीप की ज्योति विस्तारती है।
महामोह अन्धेर संहारती है।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।६।।

धूप

सुगंधी वढ़े धूप खेते अगनि में।
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।७।।

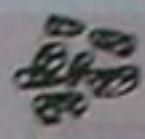
फल

अनंनास अंगूर अमरूद लाया।
महामोक्षसम्पत्ति हेतु चढ़ाया।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।८।।

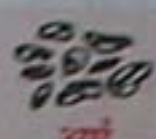
अर्घं

उदक गंध आदि मिला अर्घ लाया।
महामंत्र नवकार को मैं चढ़ाया।। णमोकार...

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंच नमस्कार मंत्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।९।।

दोहा:- शांति धारा मैं करूं, तिहुंजग शांति हेत।
भव-भव आतप शांत हो, पूजूं भक्तिसमेत।।१०।। शांतेय शांतिधारा।

दोहा:- वकुल मल्लिका पुष्प ले, पूजूं मंत्र महान्।
पुष्पांजलि से पूजते, सकल सौख्य वरदान।।११।। पुष्पांजली।

जाप्य

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं।
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।
(१०८ सुगंधित श्वेत पुष्पों से या लवंग अथवा पीले तंदुलों से जाप्य करना)

जयमाला

पंचपरमगुरुदेव नमूं नमूं नत शीश मैं।
करो अमंगल छेव, गाऊ तुम गुणमालिका।।१।।

जैवंत महामंत्र मूर्तिमंत धरा में। जैवंत परमब्रह्म शब्दब्रह्म धरा में।।
जैवंत सर्वमंगलों में मांगलिक हो। जैवंत सर्वलोक में तुम सर्व श्रेष्ठ हो।।१।।

त्रैलोक्य में हो एक तुम्हीं शरण हमारे। मां शारदा भी नित्य ही तुम कीर्ति उचारे।।
विघ्नों का नाश होता है तुम नाम जाप से। सम्पूर्ण उपद्रव नशें हैं तुम प्रताप से।।२।।

छयालीस सुगुण को घेरें अरिहंत जिनेशा। सब दोष अठारह से रहित त्रिजग महेशा।
ये घातिया को घात के परमात्मा हुए। सर्वज्ञ वीतराग औं निर्दोष गुरु हुए।।३।।
जो अष्ट कर्म नाश के ही सिद्ध हुए हैं। वे अष्ट गुणों से सदा विशिष्ट हुए हैं।
लोकाग्र में हैं राजते वे सिद्ध अनन्ता। सवार्थ सिद्धि देते हैं वे सिद्ध महन्ता।।४।।
छत्तीस गुण को धारते आचार्य हमारे। चउ संघ के नायक हमें भवसिन्धु से तारें।
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय कहाते। भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश पढ़ाते।।५।।
जो साधु अट्ठाईस मूल गुण को धारते। वे आत्म साधना से साधु नाम धारते।
ये पंचपरम देव भूत काल में हुए। होते हैं वर्तमान में भी पंचगुरु ये।।६।।
होंगे भविष्य काल में भी सुगुरु अनन्ते। ये तीन लोक तीन काल के हैं अनन्ते।
इन सब अनन्तानन्त की मैं वन्दना करूं। शिवपथ के विघ्न पर्वतों की खण्डना करूं।।७।।
इक और तराजू पे अखिल गुण को चढ़ाऊं । इक और महामंत्र अक्षरों को धराऊं ।
इस मंत्र के पलड़े को उठा न सके कोई। महिमा अनन्त यह धरे ना इस सदृश कोई।।८।।
इस मंत्र के प्रभाव श्वान देव हो गया। इस मंत्र के अनन्त का उद्धार हो गया।
इस मंत्र की महिमा को कोई गा नहीं सके। इसमें अनन्त शक्ति, पार पा नहीं सके।।९।।
पाँचो पदों से युक्त मंत्र सार भूत हैं। पैतीस अक्षरों से मंत्र परमपूत है।।
पैंतीस अक्षरो के जो पैंतीस व्रत करें। उपवास या एकाशना में सौख्य को भरें।।१०।।
तिथि सप्तमी के सात पंचमी के पांच हैं। चौदश के चौदह नवमी के भी नव विख्यात हैं।
इस विधि से महामंत्र की आराधना करें। वे मुक्ति वल्लभ पति निज कामना वरें।।११।।

दोहा:- यह विष को अमृत करें, भव-भव पाप विदूर।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मै, जजूं भरो सुख पूर।।१२।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कारमंत्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा:- मंत्रराज सुखकार, आतम अनुभव देत है।
जो पूजे रुचिधार स्वर्ग मोक्ष के सुख लहें।।१३।।

इत्याशीर्वादः । शांतिधारा, परिपुष्पांजलिः।

श्री णमोकार-चालीसा

बंदू श्री अरिहंत पद, सिद्ध नाम सुखकार,
सूरीश्रावक साधुगण हैं, जग के आधार।।१।।
इन पाँचो परमेष्ठि से, सहित मूल यह मंत्र,
अपराजित व अनादि हैं, णमोकार शुभ मंत्र।।२।।
णमोकार महामंत्र को, नमन करूं शतबार,
चालीसा पढ़कर लहूं, स्वात्मधाम साकार।।३।।